# 106 सूरए क़ुरइश

□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□-कुरैश की आयतों का विश्लेषण और आलोचना

□ चयनित न्याय तत्व : **प्रमेय (Prameya)**, **हेतु (Hetu)**, **व्याप्ति (Vyapti)**

□ संदर्भ शास्त्र : **न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, भगवद्गीता, मनुस्मृति**

---

### □ आयत **1**

**आयत:**

**"चूँकि क़ुरइश को जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस कर दिया है।"**

**न्याय विश्लेषण**

**1. प्रतिज्ञा (Pratijna):**

**कुरैश को जाड़े और गर्मी के मौसम में आरामदायक सफ़र का प्रबंध मिला है।**

**2. हेत्व (Hetu):**

**यह प्रबंध ईश्वरीय कृपा का फल है।**

**3. उदाहरण (Udaharana):**

**प्राचीन इतिहास और भूगोल में अरब क्षेत्र के जलवायु और व्यापार मार्गों के कारण कुरैशों का व्यापारिक मार्ग अपेक्षाकृत सुरक्षित और सुव्यवस्थित था।**

**4. उपनय (Upanaya):**

**यह प्राकृतिक और मानवीय कारणों पर आधारित था, न कि किसी दैवी हस्तक्षेप पर।**

**5. निगमन (Nigamana):**

**इस आयत में प्राकृतिक और सामाजिक तत्त्वों को ईश्वरीय कृपा के रूप में प्रस्तुत करना न्याय दर्शन के हेतु और प्रमेय तत्व से असंगत है।**

---

### □ आयत **2**

**आयत:**
**"तो उनको मानूस कर देने की वजह से।"**

**न्याय विश्लेषण**

**1. प्रतिज्ञा:**
**उनका आरामदायक सफ़र ईश्वर की कृपा से संभव हुआ।**

**2. हेत्व:**
**आयत में प्राकृतिक, सामाजिक और आर्थिक कारणों को नजरअंदाज कर ईश्वरीय कृपा को मात्र कारण माना गया है।**

**3. उदाहरण:**
**वैश्विक इतिहास में व्यापार मार्गों की सुरक्षा और मौसम की स्थिति प्राकृतिक कारणों का परिणाम होती है।**

**4. उपनय:**
**ऐसे कारकों को नजरअंदाज कर केवल ईश्वरीय हस्तक्षेप मानना न्याय दर्शन के व्याप्ति और हेतु के सिद्धांतों के विरुद्ध है।**

**5. निगमन:**
**यह कथन अकारण और अतार्किक है।**

---

## ▯ आयत 3

**आयत:**
**"इस घर (काबा) के मालिक की इबादत करनी चाहिए।"**

**न्याय विश्लेषण**

**1. प्रतिज्ञा:**
**काबा के मालिक की उपासना करनी चाहिए।**

**2. हेत्व:**
**आयत में कहा गया है कि प्राकृतिक और सामाजिक लाभ ईश्वर की उपासना का कारण हैं।**

**3. उदाहरण:**
**न्याय दर्शन में, किसी वस्तु या सत्ता की उपासना तभी न्यायसंगत होती है जब वह परम सत्य और नैतिकता का आधार हो।**

**4. उपनय:**
**यदि उपासना केवल भौतिक लाभ के लिए हो, तो यह स्वार्थी और तात्कालिक होता है, जो नैतिक और दार्शनिक दृष्टि से स्वीकार्य नहीं।**

**5. निगमन:**
**यह आयत उपासना की सच्चाई और तात्विकता को समझने में त्रुटिपूर्ण है।**

---

 आयत **4**

**आयत:**
**"जिसने उनको भूख में खाना दिया और उनको खौफ़ से अमन अता किया।"**

**न्याय विश्लेषण**

**1. प्रतिज्ञा:**
**ईश्वर ने उन्हें भोजन और सुरक्षा प्रदान की।**

**2. हेत्व:**
**प्राकृतिक संसाधन, सामाजिक व्यवस्था और मानवीय प्रयासों को नजरअंदाज कर केवल ईश्वर को कर्ता मानना न्याय दर्शन के प्रमेय और हेतु के सिद्धांतों के विरुद्ध है।**

**3. उदाहरण:**
**कृषि, जल स्रोत, और सुरक्षा का प्रबंध मनुष्य के प्रयासों से संभव हुआ है।**

**4. उपनय:**
**इन प्राकृतिक और सामाजिक कारणों को ईश्वरीय कृपा के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं।**

**5. निगमन:**
**यह आयत भौतिक और सामाजिक कारणों को अनदेखा कर दैवीकरण की ओर अग्रसर है, जो न्याय दर्शन के मानदंडों से असंगत है।**

---

## □ सारणी : सूरा अल -क़ुरैश की आयतों पर न्याय दर्शन के तत्वों द्वारा आलोचना

| आयत संख्या | चुना गया तत्व | मुख्य आलोचना |
|---|---|---|
| 1 | प्रमेय (Prameya), हेतु | प्राकृतिक कारणों को ईश्वरीय कृपा के रूप में प्रस्तुत करना |
| 2 | व्याप्ति (Vyapti), हेतु | प्राकृतिक और सामाजिक कारणों को नजरअंदाज करना |
| 3 | हेतु (Hetu), प्रमेय | उपासना के नैतिक आधार की उपेक्षा |
| 4 | प्रमेय (Prameya), हेतु | भौतिक संसाधनों और मानव प्रयासों को अनदेखा कर दैवीकरण |

## □ समग्र निष्कर्ष :

**सूरा अल-कुरैश की आयतें न्याय दर्शन के प्रमेय, हेतु और व्याप्ति के तत्वों पर आधारित तर्कसंगत विश्लेषण में अपर्याप्त और अतार्किक प्रतीत होती हैं।**

- **ये आयतें प्राकृतिक, सामाजिक और मानवीय कारणों को दैवी कृपा के नाम पर प्रस्तुत करती हैं,**
- **जो न्याय दर्शन के तर्कशास्त्र, भौतिक कारण-प्रभाव संबंध और नैतिकता के सिद्धांतों से भिन्न है।**
- **अतः ये आयतें तर्कसंगत और सार्वभौमिक मानवीय ज्ञान के अनुरूप नहीं हैं।**

---

**अगर आप किसी अन्य आयत का न्याय दर्शन के अनुसार विश्लेषण चाहें तो कृपया आयत भेजें।**